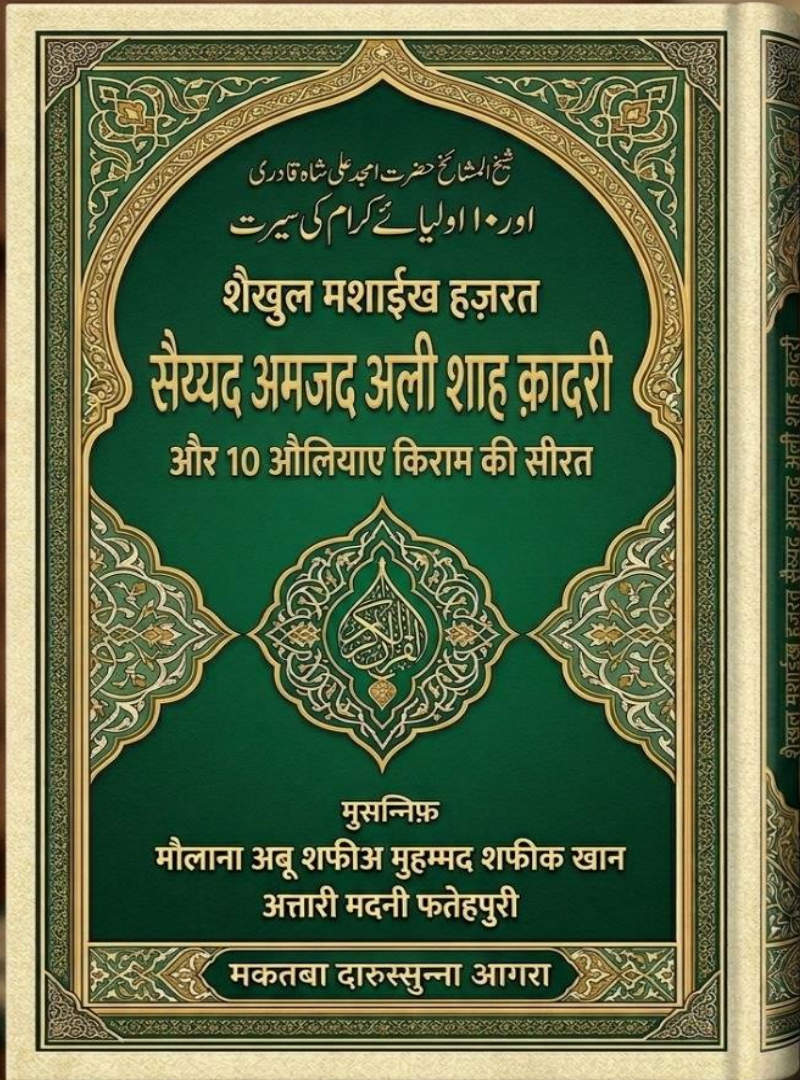
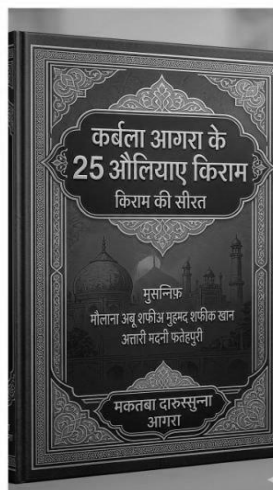
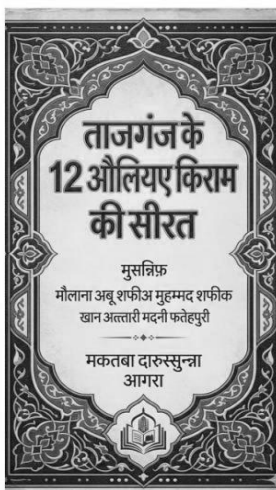
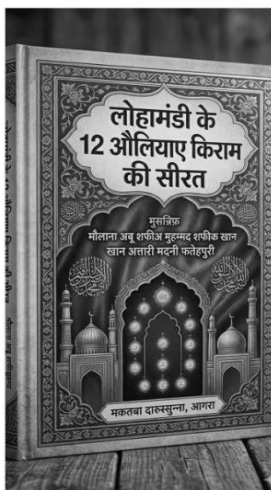
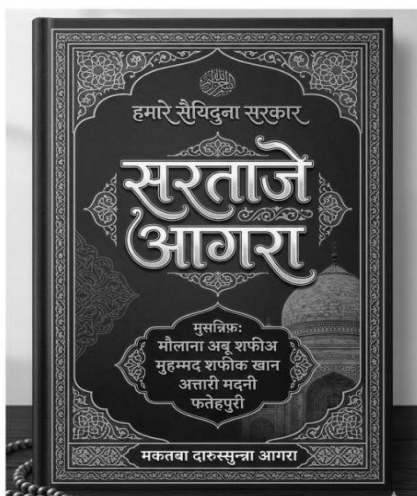
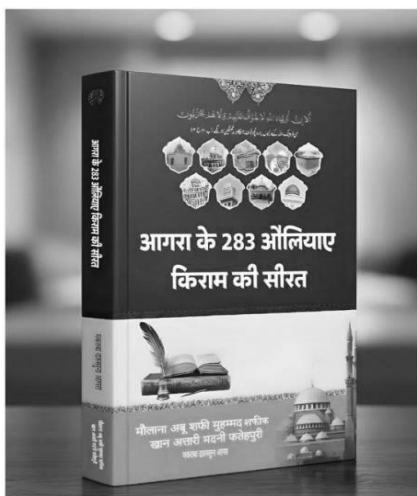




आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों ।



किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुहम्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुहम्मद शरीफ़ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अत्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअत होने की वजह से अपने नाम के साथ अत्तारी लिखते हैं, आपकी विलादत कस्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ए. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क्रियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ़ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उलूम बनाम जामिया अरबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में **क्रारी इक़बाल अहमद अत्तारी** से कुरआने पाक नाज़िरा और हज़रत मौलाना अतीकुर्रहमान मिस्बाही से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ़ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इल्मी इदारे अल

जामिअतुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उलूम ग़ौसिया (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना, फैज़ाने अत्तार नेपालगंज, नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए हदीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फरागत के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, आगरा तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअतुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआत के दरजए सानिया में चलने वाली इल्मे सर्फ़ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिआ में चलने वाली इल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह अश शफ़ीकुन नोअमानी तसनीफ़ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली हदीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह शफ़ीकिया तहरीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफ़ात का सिलसिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिअ आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़िव्या की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक्रर्रि और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक्रतन फ़वक्रतन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ़ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलियत अता करके मौसूफ़ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आज़िज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवाल: औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाब: किसी वली के मज़ार मुबारक पर हाज़िरी का तरीक़ा ये है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारक की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक्रा! आप पर सलाम हो।

(فتاویٰ رضویہ، ۹/۵۲۲، خزائن دارالافتاء وندیشین مرکز الاولیاء لاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलगरज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो।

आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़

عَنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैखुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनक़ूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर ख़ुसरु रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ ख़ुसरु! मशाइख़ के मलफ़ूज़ात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुजुर्ग़ानि दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे ख़ाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क्रियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿۱۶۹﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़्याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (प, ४, آل عمران, १६९)।

लेकिन उन बुजुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, खाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है ।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए । आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुजुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

खानवादे चिश्तिया के बुजुर्गाने दीन

खानवादे चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख सिधारी चिश्ती, शैख ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुजुर्गाने चिशत अहले बहिश्त का तज़किरा इस किताब में मौजूद है ।

खानवादे नक़्शबंदिया के बुजुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख़्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए शत्तारिया के बुजुर्गाने दीन

और मशाइखीने शत्तारिया में शैख ज़ियाउल्लाह, शैख अब्दुल्लाह, शैख बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए मदारिया के बुजुर्गाने दीन

और खानवादाए मदारिया में शाह फ़र्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़िकरा मौजूद है ।

नक्शबंदिया पौधे में चिशितया शाख पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूर मारुफ़ है, इस की शाखें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुन्इम, खलीफ़ा अबुल कासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख वली मुहम्मद वगैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है ।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख अबुल फ़त्ताह, मीर अबुल गैस बुखारी, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद अहमद बुखारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख बा यज़ीद शरवानी, शैख बा यज़ीद खवेशगी, ख्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुखारी, शैख चंदन कुरैशी, मौलाना शैख हसन शीराज़ी, शैख हुसैन बदखशी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख्वाजा खिज़र, शैख खलील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफीअ सब्ज़ पोश, मीर रफीउज़्ज़मान, शैख सालिम, सक्रा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल्लाह खटवासन, शैख अब्दुल्लाह बुखारी, शैख अब्दुलहकीम, ख्वाजा अब्दुर्रऊफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख अबदी, शैख फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख कमाल, शैख कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख मुहिबुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुखारी, शैख मुहम्मद ज़ाहिद, शैख मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख नाज़िर, शैख नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख यूसुफ़ लंक, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियाँ रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी खाकी शाह, बीबी कुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं ।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक्क़अत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक्क़रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, खुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख बुढन शत्तारी, शैख चंदन कुरैशी, शैख नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख अबुल फ़तह मक्की, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख मुबारक, शैख ज़ैनुद्दीन, शैख शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारसी वगैरा बाबरी, हुमायूनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज़्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख मुनव्वर चिश्ती, शैख आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल वहहाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख अब्दुर्हमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़ल, शैख अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्जुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईखीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख मुहम्मदी, शैख मुहम्मद सालेह, शैख नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्शीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सलतनत के तनज़्जुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्जुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफ़ुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफ़ा और मशाईखीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक्ररीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक़ यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईखीन की खानकाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क्रद्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ़ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए क़िबार यानी बड़े औलियाए क़िराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वग़ैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवमैँट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख़
तुर्बुतों में खाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
खाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की खानकाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बागात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर गैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में गैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिलज़, कॉटन मिलज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरों मारुफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज़्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के बुज़ुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख़्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़््शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने “बोस्ताने अख्यार” नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम “आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत” दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर खुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्हीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी खूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़िकरा मुस्तनद तारीखी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक्रार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला खुद को आगरा की गलियों, खानकाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक्किक्कीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीखी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक्कीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

❦ सदकए जारिया का बेहतरीन मौका ❦

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक्राबिर व औलियाए किराम की मुकद्दस जिंदगी को आम करें और अपनी आखिरत सँवारें।

📖 किताब: बोस्ताने अख्यार

🏠 मौजू: आगरा के 283 बुजुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

📖 इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, गरीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक्रसीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

💰 तक्रसीम रेट:

◆ 1 किताब — ₹350

◆ 5 किताब — ₹1750

◆ 10 किताब — ₹3500

✨ जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

✨ बुजुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

👉 आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

👉 आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल कीमत 700 रुपये रिआयती कीमत 350 रुपये

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

शैखुल मशाईख हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी और 10 औलियाए किराम की प्यारी सीरत पंजे मदरसा

(1) सैय्यिद अमजद अली शाह जाफ़री क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह 31 वास्ते से शहीदे दशते कर्बला इमामे हुसैन रज़ीअल्लाहु अन्हु से जा मिलते हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के पाँचवे दादा कुतुबुल अक़ताब मौलाना सैय्यिद इब्राहीम कुतुब जाफ़री रहमतुल्लाह अलैह मदीनए मुनव्वरा से जहांगीर बादशाह के ज़माने में आगरा में तशरीफ़ लाकर सुकूनत पज़ीर हुए थे। ख़ान जहां लोदी जो जहांगीर के ज़माने का मशहूरो मारुफ़ अमीर था आप रहमतुल्लाह अलैह का मोअतक्रिदो मुरीद था और उसने आप रहमतुल्लाह अलैह के वास्ते मदरसा, मस्जिद और मकानात अपने महल के करीब तामीर कराए थे, जिस जगह येह मकानात थे वो अब लोदी ख़ां का टीला मशहूर और रेलवे स्टेशन आगरा सिटी से मिला हुआ वाक़ेअ है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद मौलाना सैय्यिद अहमदी रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने में इत्तिफ़ाक़ से उन मकानात में आग लगी और तमाम मकानात और कुतुब ख़ाना वग़ैरा जल कर ख़ाकिस्तर हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह मौलाना ज़ियाउद्दीन बलखी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और सैय्यिद अब्दुल्लाह क़ादरी बग़दादी रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ए आज़म थे, उलूमे अक़ली और नक़ली दोनों में यक़ताए ज़माना

थे, शायरी में 'असगर' तखल्लुस और शायरी में कमाल हासिल था जिसका सबूत आप रहमतुल्लाह अलैह का मत्बूआ दीवान मौजूद है जो हकाइक़ और मआरिफ़ के मोतीयों का खज़ाना है। कमालाते बातिनी के मुताअल्लिक़ सिर्फ़ येह रिवायत काफ़ी है कि हुज़ूर महबूबे सुब्हानी ग़ौसुल आज़म जीलानी रहमतुल्लाह अलैह के इरशाद फरमाने से आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर बुजुर्ग़वार आप रहमतुल्लाह अलैह ही की तालीम के वास्ते बग़दाद से हिन्दुस्तान में आए थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह ग़्यारहवीं शरीफ़ निहायत ऐहतिमाम और धूम धाम से किया करते थे जिसका सिलसिला आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान में अब तक जारी है जिसके अख़राजात के वास्ते मौज़ा बोदला परगना आगरा माफ़ यानी वक्रफ़ है।

22 रबीउल अव्वल 1230 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने रिहलत फ़रमाई और मस्जिद शाही मुहल्ला मदरसा के इहाते में सिपुर्दे खाक किए गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वहीं मौजूद है।

“वाक़िफ़े राहे ख़ुदा सैय्यिद अमजद अली” इस के आदाद 1230 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है।

आगरा के मशहूर अदीब और नक्क़ादे सुखन जनाब सैय्यिद निज़ामुद्दीन शाह साहिब “दिल गीर” जिनका कलामे पसंदीदा तमाम हिन्दुस्तान में मशहूरों मारूफ़ है आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार और सज्जादा नशीन दरगाह हैं, अल्लाह पाक उनको बुजुर्ग़ों के मर्तबा पर पहुंचाए और उन के उलूम और कमालाते ज़ाहिरी को अरूसे अमल के ज़ेवर से आरास्ता व पैरास्ता करे। आमीन (बोस्ताने अख्यार, पेज 50, 51)

माहताबे अजमेर नामी किताब में ज़िक्र

हज़रत मौलाना सैय्यिद शाह अमजद अली कादरी अल जाफ़री मुताख़ल्लिस असगर इब्ने मौलवी सैय्यिद अहमदी शाह इब्ने सैय्यिद इल्हामुल्लाह इब्ने सैय्यिद ख़लीलुल्लाह इब्ने सैय्यिद फ़तहुल्लाह इब्ने हज़रत सैय्यिद इब्राहीम मदनी अलमारूफ़ कुतुबुल मदनी रहमतुल्लाह अलैहिम सिल्सिला नसब 23 वास्तों से हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रहमतुल्लाह अलैह तक पहुँचता है।

हज़रत कुतुबुल मदनी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़ा मुनव्वरा के सज्जादा नशीन थे। जहांगीर बादशाह के ज़माने में मदीना से हिन्दुस्तान आये और आगरा में इक़ामत डाली यानी रहने लगे। अराकीने सल्तनत में से अक्सर अमीर लोग जैसे ख़ान जहां लोदी आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक्रिद थे। ख़ान जहां लोदी ने अपने महल्लात का बड़ा हिस्सा सैय्यिद फ़तहुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में पेश कर दिया था।

मौलवी सैय्यिद अहमदुल्ला शाह अल मशहूर सैय्यिद अहमदी के ज़माना में आगरा में इन्क़िलाबात सियासी रुनुमा हुए जिसका असर अहमदुल्लाह शाह साहिब पर भी पड़ा, हवेली आग के नज़र हो गई, इल्मी सरमाया जो एक हज़ार किताबों पर मुश्तमिल था वो भी जल कर खाक हुआ। अहमदुल्लाह शाह साहिब रहमतुल्लाह अलैह यहां से उठकर मदरसा अफ़ज़ल ख़ां में इक़ामत पज़ीर हो गए। वहीं आप रहमतुल्लाह अलैह के उस्ताद मौलाना शाह आदिल रहमतुल्लाह अलैह रहा करते थे। उनके बाद मस्नदे तदरीस पर बैठे, दसों तदरीस और रुशदो हिदायत में लग गए। और 1216 हिजरी में इंतिक़ाल फ़रमाया

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह ने अक्ली और नक्ली इल्म अपने वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह से हासिल किया, इल्म हासिल करने के बाद दसों तदरीस में मशगूल हो गए।

मौलवी मुहम्मद हुसैन मुरादाबादी अन्वारुल आरिफ़ीन में लिखते हैं सैय्यिद अमजद अली इब्ने मौलवी सैय्यिद अहमद जाफ़री, खलीफ़ा अब्दुल्लाह बग़दादी इल्म व फ़ज़ल के साथ शौखे तरीक़त भी थे।

हज़रत शाह अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और खलीफ़ा थे और सैय्यिद शाह ज़ियाउद्दीन बलख़ी रहमतुल्लाह अलैह से भी ख़ानदाने चिशितया, नक्शबंदिया में साहिबे इजाज़त थे।

2 रबीउल अव्वल 1232 हिजरी में ब मक़ाम हवेली ख़्वाजा नाई मंडी आगरा में इस ज़हाने फ़ानी से रेहलत फ़रमाई और मदरसा शाही पंजा में दफ़न हुए। (माहताबे अजमेर पेज 106,108)

ग़ौसे आजम शौख अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह बग़दाद से हिन्दुस्तान तशरीफ़ ला कर हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह को ख़िलाफ़त और इजाज़त से नवाज़ा जिस का हाल खुद हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी सुनिए चुनांचे फ़रमाते हैं:

जब फ़र्ज़दे महबूबे सुब्हानी हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी कादरी रहमतुल्लाह अलैह आगरा तशरीफ़ लाए और मुहल्ला ताजगंज में क्रियाम फ़रमाया तो मैं भी हाज़िरे ख़िदमत हुआ और क़दम बोसी की। हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने मेरा सर अपने सीने से लगा लिया और कसीर मजमा के सामने फ़रमाया: ऐ मेरे बेटे अमजद अली! मैं आगरा में अपने जद्द हज़रत ग़ौसे आजम रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से इसलिए आया हूँ कि तुम्हें बुज़ुर्ग़ाने दीन का ख़िरका, कुलाह यानी टोपी, इल्म और

ख़िलाफ़त इनायत करूँ। मैं हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के इत्तिबा में यहां तक पहुंचा हूँ। तुम्हें मुबारक हो कि येह दौलत बे मांगे मिल रही है। येह सुनकर खुशी की हद ना रही और मुझ पर एक बे खुदी तारी हो गई, जब मुझे होश आया तो मैंने अर्ज किया : ऐ मेरे आक्का! कमज़ोर च्यूंटी से पहाड़ का बोझ कैसे बर्दाश्त हो सकता है? हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने तबस्सुम फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया: येह मन्सब मेरे जद् हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह ने तुम्हें इनायत फ़रमाया है मेरे हाथ से लो और कुदरते क़ादिर का तमाशा देखो।

हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने एक चोर को एक नज़र में कुतुब बना दिया था तुम तो शरीफ़ुल क़ौम और साहिबे इल्म हो और सैय्यिद हो और दरवेशों से निस्बत रखते हो, तुम्हारे वालिद रहमतुल्लाह अलैह भी इस सिल्सिले से ताअल्लुक रखते हैं। अगर तुम्हें अपनी शफ़क़त की वजह से इस नेअमत से नवाज़ा गया तो क्या बर्ईद है।

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते: हैं कि चंद मवानिआत यानी रुकावट की वजह से ख़िलाफ़त अता करने में कुछ ताख़ीर होती रही यहां तक कि ग़्यारहवीं के दिन मुझे तलब फ़रमाया और शोरफ़ा, नोज़बा और मशाईख़ के एक बड़े मजमा के सामने अपने हाथ से मुझे ख़िरकए ख़िलाफ़त पहनाया और अपने सर मुबारक की टोपी मेरे सर पर रखी और अलमे क़ादरी और ख़िलाफ़त नामा जो मेरे पास मौजूद है अता फ़रमाया और मुरीदों को हुक्म दिया कि उनको मेरा क़ाइम मक्राम और नाइब समझते हुए हर महीने की ग़्यारहवीं और ख़ास कर बड़ी ग़्यारहवीं की फ़ातिहा में उनके मददगार और मुआविन रहें और मेरे जद् की नियाज़ उनको पहुंचाएं और बाल बराबर उनके हुक्म से इन्हिराफ़ ना करें यानी ना हटें, जो कोई उनके ख़िलाफ़ होगा वो मेरे और मेरे जद् बुजुर्ग़वार

यानी गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के ख़िलाफ़ है। और इसी रोज़ ख़्वाजा मुहम्मद मीर साहिब रहमतुल्लाह अलैह को ख़िरकए ख़िलाफ़त, ख़ास टोपी और इल्म मर्हमत फ़रमाया।

इस के बाद मौलवी शम्सुद्दुहा रहमतुल्लाह अलैह और सैय्यिद हसन अली साहिब रहमतुल्लाह अलैह को ख़िरकए ख़िलाफ़त, टोपी मुबारक और ख़िलाफ़त नामा अता हुआ।

जब हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह आगरा से रामपुर तशरीफ़ ले गए जहाँ अब हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक है तो वहाँ पहुँच कर मुझे तलब फ़रमाया और वहाँ ख़िल्ते ख़ास, दस्तार अपने सर मुबारक की और पंजए बग़दादी और अलम नामा अता फ़रमाया।

येह पंजा बग़दाद शरीफ़ का बना हुआ है और इस में “या सैय्यिद सुल्तान अब्दुल क़ादिर जीलानी शैइन लिल्लाह अल मदद” लिखा हुआ है। येह अलम हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह बग़दाद शरीफ़ से हिन्दुस्तान तशरीफ़ आवरी के वक़्त साथ लाए थे। हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि येह अलम मुबारक मेरे ज़द् और मेरे आका गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार अक़दस के सिरहाने लगा हुआ था, मैं उसे हिन्दुस्तान ले आया था, अब हज़रत गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की येह अमानत उनके हुक्म के मुताबिक़ तुम्हें इनायत करता हूँ इस की ताज़ीम जैसी चाहिए वैसी करना।

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं चुनांचे वो अलम शरीफ़ मेरे पास है और ग्यारहवीं शरीफ़ की मजलिस में एक मकान में जो कटरा आब रेशम ताजगंज में है और जिसके मालिकों ने वो मकान

हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की नज़र कर दिया है। और हज़ारों मुरीदीन और तालिबीन उस रोज़ उस की ज़ियारत करते हैं।

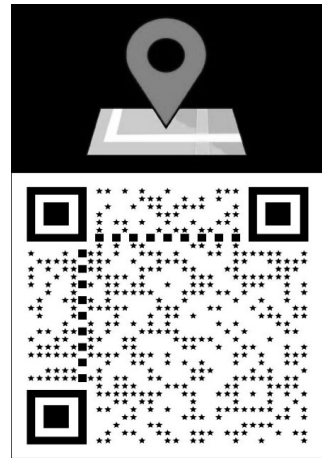
(फ़र्ज़ि ग़ौसे आज़म पेज 116,117)

मौजूदा हालत 2025

सैय्यिद अमजद अली शाह ज़ाफरी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पंजे मदरसा की खानकाह में बनी हुई है। एक लाइन में 6 मज़ार हैं, इन मज़ारात के ऊपर एक खूबसूरत गुंबद बना हुआ है, खानकाह के इहाते में और भी कई कब्रें हैं जिन में से बाज़ में नाम लिखे हुए हैं और बाज़ में नहीं। खानकाह के गुंबद के नीचे जो मज़ारात हैं उनकी तफ़्सील येह है :

1	2	3	4	5	6
मुहम्मद अली शाह	असगर अली शाह	अमजद अली शाह	मुज़फ़्फ़र अली शाह	मुनव्वर अली शाह	सैय्यिद अब्दुल उला शाह

पंजा मदरसा में मौजूद तमाम मज़ारात के मज़ार की Location का QR Code इस को अपने मोबाइल से Scan कीजिए, आप के मोबाइल पर Location खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(2) मौलवी आदिल

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद यानी आगरा के उलमा में से हैं, मौलाना अहमदी रहमतुल्लाह अलैह जो मौलाना सैय्यद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद हैं आप रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मस्जिद मुहल्ला मदरसा में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज93)

मौजूदा हालत 2025

मौलवी आदिल रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पंजे मदरसा की खानकाह की मस्जिद के दरवाज़े के पास बनी हुई है।

(3) मौलाना अहमदी क़ादरी

हज़रत का नाम मुबारक सैय्यद अहमदुल्लाह और उर्फ मौलाना अहमदी था, आगरा के सादाते इज़ाम और उलमाएँ किराम में से थे, रस्मी उलूम में मौलाना आदिल अकबराबादी के शागिर्दे रशीद थे, 1216 हिजरी में खुल्दे बरीं की राह ली यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

सैय्यद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़दे रशीद यानी बेटे ने येह तारीखे रिहलत मौजूं फ़रमाई जो आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक वाक़ेअ मस्जिद शाही मुहल्ला मदरसा पर लिखा हुआ है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के तीन साहिबज़ादे थे:

- (1) बड़े बेटे सैय्यद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह
- (2) मँझले बेटे सैय्यद मुहम्मद मीर रहमतुल्लाह अलैह और
- (3) छोटे बेटे गुलाम मुस्तफ़ा रहमतुल्लाह अलैह

बड़े और मँझले बेटे के हालात इस किताब में मौजूद हैं, छोटे साहिबजादे मौलवी डिप्टी इम्दादुल उला मरहूम डिप्टी कलैक्टर के वालिदे माजिद थे। (बोस्ताने अख्यार, पेज 43.44)

मौजूदा हालत 2025

मौलाना अहमदी कादरी रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पंजे मदरसा की खानकाह के दरवाजे के पास बनी हुई है।

दीवार पर एक पत्थर लगा हुआ है जिस पर हजरत सैय्यद मौलाना अहमदुल्लाह कादरी अहमदी अकबराबादी लिखा हुआ है और नाम के नीचे फारसी के चार शेअर भी लिखे हैं। और तारीख 1216 हिजरी लिखी है।

(4) हकीम सैय्यद मीर

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यद अहमदी के मँझले बेटे हैं, तबीबे हाज़िक्र, खुदा दोस्त और दीगर औसाफ़े हमीदा और अखलाक़े पसंदीदा से मौसूफ़ थे। अपने वालिद माजिद रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से तमाम उम्र तबाबत के लिबास में मख़्लूक़े खुदा को फ़ैज़ पहुंचाते रहे जिसका सिल्सिला अब तक आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान में जारी है, चुनांचे हकीम मासूम अली इब्ने सैय्यद इमाम अली आप रहमतुल्लाह अलैह के पोते इस ख़िदमत को अब तक अंजाम दे रहे हैं।

1223 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने इंतिक़ाल फ़रमाया आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक शाही मस्जिद मुहल्ला मदरसा के इहाते में वाक़ेअ है, लौहे मज़ार पर तारीख़ लिखी हुई है।

“चश्मए सिदक्रो सफ़ा कुदवए दीं सैय्यिद मीर” इस के आदाद 1223 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है। (बोस्ताने अख्यार, पेज220)

(5) सैय्यिद मुनव्वर अली शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्जंदे रशीद यानी बेटे, मुरीद और सज्जादा नशीन थे, खुदा शनासों के पसंदीदा अफ़आल आप रहमतुल्लाह अलैह में मौजूद थे। आप रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने में मराठों की हुकूमत थी, महाराजा सिंधिया बहादुर और अक्सर मराठा सरदार आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक्रिद और हल्का ब गोश थे।

और हज़रत ग़ौसे आजम रहमतुल्लाह अलैह की फातिहा यानी ग्यारहवीं शरीफ़ के अख़राजात और दीगर मसारिफ़ के वास्ते बेश क्रार जागीरें आप रहमतुल्लाह अलैह को दी थीं।

1235 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई और अपने वालिदे बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब यानी मस्जिद शाही मुहल्ला मदरसा के इहाते में महव राहत हैं यानी मज़ार मुबारक है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज216)

(6) सैय्यिद मुज़फ़्फ़र अली शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद मुनव्वर अली शाह इब्ने सैय्यिद अमजद अली शाह के फ़र्जंदे रशीद यानी बेटे और शैख़ निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के बेटे मौलाना नियाज़ अहमद बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा थे, तमाम उम्र तालिबाने राहे हक़ीक़त को तालीम व तल्कीन फरमा कर 1299 हिजरी में विसाल फ़रमाया, आप रहमतुल्लाह अलैह का

मज़ार मुबारक सेहन मस्जिद मुहल्ला मदरसा में वाक़ेअ है और मज़ार के तख्ती पर येह तारीख़ लिखी हुई है :

शाह मुजफ़्फ़र निस्फ़ शब अज़ आशिर अव्वल रबीअ

आसूदा दर कुर्ब इलाह अहलन व सहलन मरहबा

साल विसालश अज़ सर अल्लाहु अकबर ऐ हसन

शम्सुल हुदा बदरुद्दुजा नज़्मुल उला नूरुल हबा

तसव्वुफ़ में एक ज़ख़ीम किताब 'जवाहिरे ग़ैबी' आप रहमतुल्लाह अलैह के कमालात की बेहतरीन यादगार है जो मत्बअ नवल किशोर लखनऊ में छुप गई है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज 210.211)

दरगाह जलाल बुखारी ताजगंज

(7) मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह इनायत क़ारी शत्तारी लाहौरी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा ए आजम और बड़े साहिबे बातिन और आरिफ़े कामिल बुजुर्ग थे, मशहूर है कि चालीस बरस तक आप रहमतुल्लाह अलैह को बुखार आया।

मौलाना सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह (जिन का मज़ार मुबारक पंजे मदरसा आगरा में मौजूद है) पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ही के मुरीद व मो'तकिद थे और आप रहमतुल्लाह अलैह ही के हुक्म से हज़रत अब्दुल्लाह शाह क़ादरी बगदादी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हो कर उनके मुरीद हुए, हज़रत मौलाना सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह की तारीफ़ में एक क़सीदा कहा है जो उनके दीवान में मौजूद है।

तसव्वुफ़ में आप रहमतुल्लाह अलैह का रिसाला बनाम 'क़तरुन्नजात' यादगार है, जिसका क़लमी नुस्खा हकीम सैय्यद इरफ़ान अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के कुतुब ख़ाने में मौजूद है जो कि सुई कटरा आगरा में है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक सैय्यद जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के करीब जानिबे मग़रिब वाक़ेअ और ज़ियारत गाह है, तारीख़े रिहलत येह है

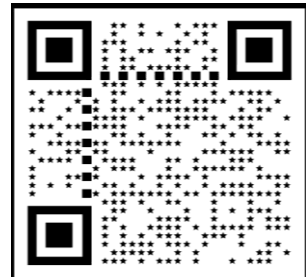
सरवरे आरिफ़ाने बा तमकीं
चूँकि शुद अज़ जहां ब खुल्दे बरीं
साल नक़लश ब जुस्तम अज़ दिल ख्वेश
गुफ़्त मक़बूले हक़ ज़ियाउद्दीन

'मक़बूले हक़ ज़ियाउद्दीन' के अदद 1193 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का साल है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज 91)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के आस पास बहुत से क़ब्रें बनी हैं काफ़ी पता करने के बाद भी आपके मज़ार का कुछ पता ना चल सका। लेकिन बाद में एक शख्स से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने बताया कि आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वही है जो अब हाफ़िज़ साहिब के मज़ार से मशहूर है। और येह मज़ार जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के नीचे मौजूद है।

सैय्यद जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की Location का QR Code इस को अपने मोबाइल से Scan कीजिए, आप के मोबाइल पर Location खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



मलकों गली ताजगंज

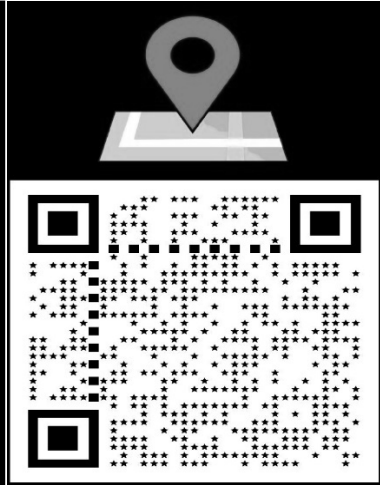
(8) सैय्यिद इमाम अली शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा और आगरा के मुताअख़िखरीन यानी बाद में होने वाले मशाईखीन में हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह मुहल्ला नमक की मंडी के रहने वाले थे, मज़ार मुबारक इहातए दरगाह मीर मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह में मुत्तसिल मस्जिद गली मल्कान ताजगंज वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज 52)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत सैय्यिद इमाम अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर तख़्ती ना होने की वजह से कुछ पता नहीं चल सका कि आप रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक कौन सी है ? लेकिन ये बात तै है कि हज़रत शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की चहार दीवारी के अंदर ही है।

सैय्यिद इमाम अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



कब्रिस्तान दीवानख़ाना

(9) हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन रज़वी क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद सदरुद्दीन इब्ने सैय्यिद अमजद वल्द सैय्यिद हाफ़िज़ इनायतुल्लाह मुल्तानी के फ़र्जद रशीद यानी बेटे थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के आबाओ अज्दाद मुल्तान में सुकूनत पज़ीर और सब सोलहाएँ उम्मत में से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के तीसरे दादा हाफ़िज़ इनायतुल्लाह जहांगीर बादशाह के ज़माने में अपने बाल बच्चों के साथ आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए, उस वक़्त से माहवार वज़ीफ़ा दरबारे शाही से मुक़र्रर हुआ जो आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद सैय्यिद सदरुद्दीन की हयात तक बराबर मिलता रहा। जब आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़माना आया तो तसदीक़ के वास्ते साहिबे कलैक्टर ज़िला के रूबरू जाना लाज़िमी हुआ। आप रहमतुल्लाह अलैह ने बावजूद लोगों के बेहद इसरार के इस अमर को मंज़ूर ना फ़रमाया और रज़्ज़ाक़े हक़ीक़ी की रोज़ी पर क़नाअत करते हुए उस वज़ीफ़े पर लात मार दिया।

बचपन ही से विलायत की निशानी आप रहमतुल्लाह अलैह की पेशानी पर ज़ाहिर थी, चुनांचे तमीज़ की उम्र को पहुंच कर बहुत जल्द आप रहमतुल्लाह अलैह ने उलूमो फ़नून ख़ुसूसन हिक्मत में कमाल हासिल कर लिया और ख़ुदा शनासी के शौक़ में अपने ज़माने के बुज़ुर्ग़ाने दीन की ख़िदमत में हाज़िर रहने लगे। सबसे पहले आप रहमतुल्लाह अलैह को शैख़ मुहम्मद चिशती रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत से फ़ैज़ हासिल हुआ और इन्ही की बदौलत तरीक़त शनास सालिकों के हालात से पूरी वाक़िफ़ीयत पैदा कर के हुक्म के मुताबिक़ सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी अक़बराबादी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हुए और आप रहमतुल्लाह अलैह के अन्फ़ास और तवज्जोह की

बरकत से बहुत जल्द माअनवी अज़मत हासिल करके ख़िलाफ़तो दामादी के शर्फ़ से मुशर्रफ़ हुए यानी सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी बेटी का निकाह आप रहमतुल्लाह अलैह से कर दिया ।

आप रहमतुल्लाह अलैह में ख़ुदा शनासाँ बा कमाल के तमाम पसंदीदा अफ़आल मौजूद थे । साहिबे अन्वारुल आरिफ़ीन का बयान है कि मैं दो मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह के अख़्लाक़े हमीदा और अक़्वाल संजीदा ना काबिले बयान हैं, अगर किसी से इत्तिफ़ाक़ीया या जानबूझ कर कोई ख़ता आप रहमतुल्लाह अलैह के हक़ में सरज़द हो जाती है तो आप रहमतुल्लाह अलैह उस के इंतिक़ाम में उस को राहत पहुंचाने की तमाम तर कोशिश फ़रमाते हैं ।

आप रहमतुल्लाह अलैह अपने आरामो आसाईश पर दोस्तों और मुख़्लिसों की राहत को तर्जीह देते हैं, हर शख़्स की ताज़ीम के वास्ते उठते हैं, उलमा, फ़ुकरा के दोस्त और उनकी ताज़ीम व तकरीम में कोई कमी नहीं उठा रखते । दीवानख़ाना के दरवाज़ा तक उनका इस्तिक़्बाल फ़रमा कर अपने ख़ास मस्नद को उन के वास्ते छोड़ देते हैं, इसी तरह रुख़स्त के वक़्त दरवाज़े तक साथ जाते हैं ।

अख़ीर उम्र में मसंदो तकिया तर्क कर के दीवानख़ाना में रुई का फ़र्श बिछवा दिया था सब के साथ उसी पर बैठते थे, चुनांचे जब मैं (यानी सईद अहमद मरहरवी) दोबारा मुरादाबाद से अक़बराबाद गया और आप रहमतुल्लाह अलैह की मुलाज़िमत में हाज़िर हुआ तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: कि ख़ल्के ख़ुदा को फ़र्श पर बैठा हुआ देख कर मुझे मस्नद पर तकिया लगा कर बैठने में बहुत शरम मालूम होती थी लिहाज़ा मैंने मस्नदो तकिया तर्क कर दिया है ।

रोज़ाना अक्सर मर्दों औरतें हाज़िरे ख़िदमत हो कर ख़ानदाने क़ादरिया में आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद होते थे, ख़ुसूसन माहे रबीउस्सानी में लोग बहुत कसरत से मुरीद होते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के औक्रात निहायत मुंजबित थे, नमाज़े तहज्जुद से सुबह की नमाज़ तक आप रहमतुल्लाह अलैह अल्लाहपाक के ज़िक्र में मशगूल रहते फिर फ़ज़्र की नमाज़ अदा कर के दुरूदो वज़ाइफ़ का विर्द फ़रमाते हैं, फिर नमाज़े इशराक़ से फ़ारिग़ हो कर दोस्तों, हम नशीनों से हमसुहबत हो कर बातचीत करते हैं, दोपहर के करीब खाना तनावुल फ़रमाते और अक्सर मुख़्लिसाने ख़ास से मिलते जुलते हैं। ज़वाल के बाद नमाज़े जुहर अव्वल वक़्त में पढ़ कर इस्तिराहत यानी कुछ आराम फ़रमाते हैं, फिर बेदार हो कर वुजू के बाद आम मजलिस का वक़्त होता है और लोग ख़िदमते बा बरकत में बारयाब होते हैं, इस के बाद नमाज़े अस्र जमाअत के साथ अदा फ़रमाते हैं, बाद नमाज़ मग़रिब वरज़िश वग़ैरा से फ़ुर्सत पा कर आप रहमतुल्लाह अलैह खाना खाने के वास्ते घर में जाते हैं थोड़ी देर बाद वापिस आकर मुरीदों और मोअतक्रिदों को इल्मे बातिन की तालीम व तल्कीन फ़रमा कर और नमाज़े इशा बा जमाअत अदा कर के आराम फ़रमाते हैं।

अजीब तसख़ीर और तसरूफ़ आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात में है। हर अमीरो ग़रीब जो दीगर शहरों से आगरा में आते हैं आप रहमतुल्लाह अलैह की मजलिस में ज़रूर हाज़िर होते हैं, राक्रिम (सईद अहमद मरहरवी) ने दो साल के करीब कभी इन औक्रात में ख़लल नहीं देखा। यहां तक मशहूर है कि जिस दिन आप रहमतुल्लाह अलैह के जवान, ख़ुश रु, लाइक्रो फ़ाइक और अहले इल्म साहिबज़ादा सैय्यद शेर अली ने इंतिक़ाल फ़रमाया उस दिन भी आप रहमतुल्लाह अलैह के मामूलात में कुछ फ़र्क़ नहीं आया था और आप

रहमतुल्लाह अलैह ने क़ज़ा व रिज़ाए इलाही पर साबिरो शाकिर रह कर कुछ ज़ज़ा फ़ज़ा नहीं फ़रमाया था ।

बहादुर शाह ज़फ़र को आप रहमतुल्लाह अलैह से ख़ास अक़ीदत थी। कई मर्तबा बहुत इसरार से आप रहमतुल्लाह अलैह को दिल्ली में बुलाया मगर आप रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ नहीं ले गए । एक मर्तबा जबकि नवाब ऐहतिशामुद्दौला अमीनुर्रहमान ख़ान के इसरार से जो आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदाने जान निसार से थे आप रहमतुल्लाह अलैह दिल्ली तशरीफ़ ले गए थे, हर चंद बादशाह ने कोशिश की कि आप रहमतुल्लाह अलैह हाज़िरे दरबार हो कर मुलाक़ात फ़रमाएं मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल नहीं फ़रमाया, आख़िरे कार एक दिन जबकि आप रहमतुल्लाह अलैह हज़रत कुतुबुल अक़ताब कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की ज़ियारत के वास्ते गए तो बहादुर शाह ज़फ़र ने वहीं हाज़िरे ख़िदमत हो कर नज़र पेश की । आप रहमतुल्लाह अलैह ने नज़र तो मंज़ूर नहीं फ़रमाई सिर्फ़ बादशाह का दीवान ले लिया ।

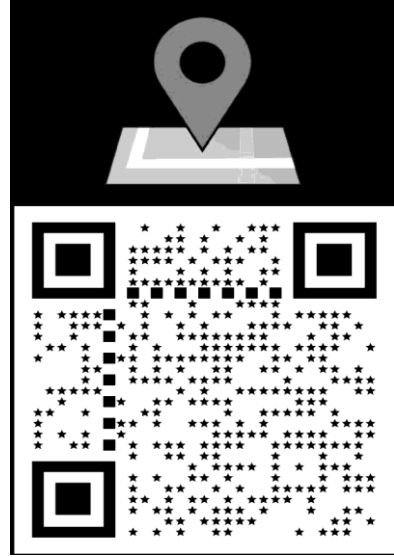
आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात के बयान की इस मुख़्तसर किताब में गुंजाइश नहीं । रिसाला “**ख़वारिक़े आदात**” में जो हकीम सैय्यिद इरफ़ान अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के कुतुब ख़ाना में मौजूद है आप रहमतुल्लाह अलैह की एक सौ चार करामतों का मुफ़स्सल हाल कलमबंद है, जिसे शौक़ हो मुलाहज़ा कर सकता है ।

23 सफ़र 1207 हिजरी को जुमा के दिन आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस दारे ना पाएदार से कूच फ़रमाया और बहिश्त नशीनों के हम नशीन हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया । **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल शिफ़ाख़ाना दीवानख़ाना के इहाते में ज़ियारत गाह ख़ासो आम है, लौहे मज़ार पर येह तारीख़ लिखी हुई है:

मुर्शिदे आफ़ाक़ नूरुद्दीन हबीबे मुस्तफ़ा
सर्वे बाग़े मुर्तज़ा मक़बूल रब्बुल आलमीं
सैय्यिद आली नसब ज़ीनए अन्वारे हक़
आलम वाला हस्बे गंजीना इल्मुल यकीं

आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे हकीम महर अली रहमतुल्लाह अलैह
के हालात इस किताब में मौजूद हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज 231, 235)

कब्रिस्तान दीवान खाना में
मौजूद औलियाए किराम की
मज़ारात के Location का QR
Code इस को अपने मोबाइल से
Scan कीजिए, आप के मोबाइल
पर Location खुल जाएगी,
जिस की मदद से आसानी के
साथ आप मज़ार मुबारक तक
पहुँच सकते हैं।



बोदला (क़दम रसूल)

(10) क़ाज़ी सैय्यिद महर अली क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह बड़े आबिदो ज़ाहिद और सालिके राहे खुदा
थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के बाप दादा शाही ज़माने में सब्ज़वार से आगरा में
तशरीफ़ लाए थे, मुहल्ला बिल्लौच पुरा में आप रहमतुल्लाह अलैह का मस्कन
था, खानदान में शाही ज़माना से नस्लन बाद नस्लिन क़ज़ा का ओहदा

चला आता था, मौलाना अमजद अली शाह क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के आप रहमतुल्लाह अलैह मुरीद और मुख्तारे आम थे।

सफ़र 1270 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हुआ। मज़ार मुबारक मौज़ा बोदला में दरगाह क़दम शरीफ़ के इहाते के बाहर वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज 218)

मौजूदा हालत 2025

काज़ी सैय्यिद महर अली कादरी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक बोदला क़दम रसूल से पहले गली में मौजूद है, मज़ार मुबारक निहायत बोसीद और गुंबद की हालत खस्ता है, मज़ार का फर्श बालू और सीमेन्ट का है, तख्ती में नाम और तारीख गलत लिखी हुई है, कई साल से पेंट ना होने की वजह से गुंबद और दीवारों पर काई जमी हुई है।

काश ! कोई आशिके औलिया आगे आये और फर्श पर मार्बल, गुंबद और दीवारों पर पेंट और कुछ मरम्मत का काम करवा कर नाम व तारीख की तख्ती लगवा कर सवाब कमाए और औलियाएँ क़िराम के फ़ैज़ान से मालामाल हो।

काज़ी सैय्यिद महर अली कादरी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के Location का QR Code इस को अपने मोबाइल से Scan कीजिए, आप के मोबाइल पर Location खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



रामपुर यू पी

(11) हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रामपुरी

हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में से हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का ख़ानदानी और रुहानी शज़रए नसब 11 पुश्त पर हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक से जा मिलता है। आप रहमतुल्लाह अलैह अपने वालिद माजिद हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल ज़लील जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के रुहानी जानशीन हैं। हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की तरफ़ से जो फ़ैज़ आप रहमतुल्लाह अलैह ने हासिल किया उसने आप रहमतुल्लाह अलैह को कादरी सिल्सिले का एक बहुत बड़ा वली बना दिया।

हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाने का वाक़िआ येह है कि हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की तरफ़ से आप रहमतुल्लाह अलैह को हालते ख़्वाब में बिशारत हुई और हुक़्म हुआ कि हिन्दुस्तान जाएं और हज़रत सैय्यिदुना सरकार शाह नियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को कादरी सिल्सिले में बैअत करें और अपना रुहानी जानशीन (ख़लीफ़ा) बनाएं।

इसी तरह हिन्दुस्तान में हज़रत ख़्वाजा सैय्यिदुना फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने अपने ख़्वाब में हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत की और आप रहमतुल्लाह अलैह को हुक़्म हुआ कि अन्क़रीब हम अपना फ़र्ज़द नियाज़ की बैअत के लिए भेजेंगे और हज़रत सैय्यिदुना फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह को हज़रत सैय्यिदुना अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह की शबीह यानी सूरत दिखा कर पहचान कराया गया।

छः महीने के बाद हज़रत ख्वाजा सैय्यिदुना फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह को दोबारा हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत हुई और सैय्यिदुना ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: फ़ख़रुद्दीन! हमारी औलाद दिल्ली में है और तुमने उस की ख़बर भी नाली। हज़रत ख्वाजा सैय्यिदुना फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने अगली ही सुबह मिठाई से भरा थाल तैयार कराया और अपने सर पर रखे हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के इस्तिक्बाल के लिए और हज़रत सैय्यिदुना सरकार शाह नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह का हाथ थाम कर जामा मस्जिद दिल्ली का रुख किया, जहां हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह दिल्ली पहुंच कर मुक़ीम थे। हज़रत ख्वाजा सैय्यिदुना फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह को देखते ही पहचान लिया और आप रहमतुल्लाह अलैह से मुलाक़ात फ़रमाई।

हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह ने मुलाक़ात से फ़ारिग़ होते ही हज़रत सैय्यिदुना सरकार शाह नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को जामा मस्जिद में भारी हुज़ूम के सामने कादरी सिल्सिले में बैअत किया और हज़रत सैय्यिदुना सरकार शाह नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को अपना जानशीन मुक़र्रर फ़रमा कर ख़िलाफ़त से नवाज़ा।

हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह दिल्ली की जामा मस्जिद में जब क्रियाम पज़ीर थे। आप रहमतुल्लाह अलैह ने दिल्ली में बहुत इज़्ज़त और मक़बूलियत हासिल की। हिन्दुस्तान में उस वक़्त के अज़ीम सूफ़ियाए किराम में हज़रत ख्वाजा सैय्यिदुना

फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानाँ रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत ज़फ़र अली शाह शहाबादी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत मीर नानू रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत फ़तह अली रहमतुल्लाह अलैह मौजूद थे और सबने मिलकर हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह को उनके ऐहतिराम में ख़िराजे अक़ीदत पेश किया, यहां तक कि उन्होंने आप रहमतुल्लाह अलैह की पालकी को अपने कंधों पर उठा लिया।

हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के हिन्दुस्तान आने का सबब “फ़ज़्रदे ग़ौसुल आज़म” नामी किताब में कुछ यूँ लिखा है कि:

जब दिल्ली में हज़रत नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह के कमाल की शोहरत हुई तो हासिदों ने येह मशहूर किया कि उनको किसी से बैअत ही नहीं, कमाल क्या होगा ? येह सुनकर नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को सख़्त मलाल हुआ, कई रोज़ के बाद मौलाना फ़ख़रुद्दीन देहलवी रहमतुल्लाह अलैह सुब्ह के वक़्त मकान से बरामद हुए, सब ख़ुद्दाम सलाम के लिए हाज़िर थे, मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह की तरफ़ देख कर फ़रमाया: कि मियां! आज रात हज़रत पीराने पीर, ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह ने तुम्हारी बैअत अपने दस्ते मुबारक पर क़बूल फ़रमाई और मुझ को एक सूरत दिखाई है और फ़रमाया कि अपनी ख़ास औलाद में से उनको भेजता हूँ, बज़ाहिर उनके हाथ पर तकमील करा देना। येह सुन कर नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के क़दम चूमे। इस बात को छः महीने गुज़र गए कि एक दिन मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह सुब्ह को बरामद हुए और फ़रमाया: कि हज़रत पीराने पीर, ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हमारे भेजे हुए फ़ज़्रद को आज तीन रोज़ दिल्ली पहुंचे हुए गुज़रे और तुम

उन से गाफ़िल हो। येह फ़रमा कर लोगों को तलाश के लिए भेजा, उनमें से एक शख्स ने आकर बयान किया कि एक साहिब बग़दाद शरीफ़ के रहने वाले जामा मस्जिद दिल्ली में मुक़ीम हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह ने उनकी वज़ा क़ता यानी हुलिया पूछा, जैसा मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने ख्वाब में देखा वही वज़ा और क़ता उसने बयान की। येह सुन कर मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने मिठाई लाने का हुक्म दिया। जब मिठाई आ गई तो उस को ख़वान यानी थाल में रख कर उस ख़वान को अपने सर पर उठाया, हर चंद खादिमों और ख़ुलफ़ा ने अर्ज़ किया कि येह हमारा काम है हुज़ूर हमको दें। मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल नहीं फ़रमाया और इस हैसियत से कि मिठाई का ख़वान सर पर और दाहिने हाथ से हज़रत नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह का हाथ पकड़े हुए दिल्ली की जामा मस्जिद में दाख़िल हुए। देखा कि मस्जिद के बीच के दर में जो साहिब बैठे हुए हैं येह वही साहिब हैं जिनकी सूरत मुझे दिखाई गई थी।

उन बुज़ुर्ग ने जिनका नाम मुबारक सैय्यद अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह है हज़रत नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को देख कर फ़रमाया कि इन्ही की सूरत मुझको दिखाई गई थी जिनके लिए मैं भेजा गया हूँ। अर्ज़ कि मिठाई का ख़वान मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने सर से उतार कर हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के सामने रखा और हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने वहीं मस्जिद के मेहराब में दो रकअत नमाज़ अदा करने और तहीय्यत व खानदानी दुआये मासूरा के बाद बैअत फ़रमाई, और हर किस्म की तालीम और तल्क़ीन से नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को मालामाल कर दिया।

(फ़र्ज़दे ग़ौसुल आज़म, पेज 125,126)

हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के आगरा आने का वाक़िया “फ़र्ज़दे ग़ौसुल आज़म” किताब में कुछ यूँ लिखा है कि ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह बग़दाद से हिन्दुस्तान तशरीफ़ ला कर हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह को ख़िलाफ़त व इजाज़त से नवाज़ा जिस का हाल ख़ुद हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी सुनिए चुनांचे फ़रमाते हैं:

जब फ़र्ज़दे महबूबे सुब्हानी हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी कादरी रहमतुल्लाह अलैह आगरा तशरीफ़ लाए और मुहल्ला ताज गंज में क्रियाम फ़रमाया तो मैं भी हाज़िरे ख़िदमत हुआ और क़दम बोसी की। हज़रत रहमतुल्लाह अलैह ने मेरा सर अपने सीने से लगा लिया और कसीर मजमा के सामने फ़रमाया: ऐ मेरे बेटे अमजद अली! मैं आगरा में अपने जद्द हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से इस लिए आया हूँ कि तुम्हें ख़िरकए बुज़ुर्ग़ान, कुलाह यानी टोपी, अलम और ख़िलाफ़त इनायत करूँ। मैं हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के इत्तिबा में यहां तक पहुंचा हूँ। तुम्हें मुबारक हो कि येह दौलत बे मांगे मिल रही है। येह सुनकर खुशी की हद ना रही और मुझ पर एक बे ख़ुदी तारी हो गई, जब मुझे होश आया तो मैंने अर्ज़ किया ऐ मेरे आक्रा! कमज़ोर च्यूंटी से पहाड़ का बोझ कैसे बर्दाश्त हो सकता है? हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने तबस्सुम फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया: येह मन्सब मेरे जद्द हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह ने तुम्हें इनायत फ़रमाया है मेरे हाथ से लो और कुदरते कादिर का तमाशा देखो। हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने एक चोर को एक नज़र में कुतुब बना दिया था तुम तो शरीफ़ क़ौम और साहिबे इल्म हो और सैय्यिद हो और दरवेशों से निस्बत रखते हो, तुम्हारे वालिद

भी इस सिलसिले से तअल्लुक रखते हैं। अगर तुम्हें अपनी शफ़क़त की वजह से इस नेअमत से नवाज़ा गया तो क्या बर्ईद है।

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि चंद रुकावटों की वजह से ख़िलाफ़त अता करने में कुछ ताख़ीर होती रही यहां तक कि ग़्यारहवीं के दिन मुझे तलब फ़रमाया और शुरफ़ा, नुजबा और मशाईख़ के एक बड़े मजमा के सामने अपने हाथ से मुझे ख़िरकए ख़िलाफ़त पहनाया और अपने सर मुबारक की टोपी मेरे सर पर रखी और अलमे क़ादरी और ख़िलाफ़त नामा जो मेरे पास मौजूद है अता फ़रमाया और मुरीदों को हुक़म दिया कि उनको मेरा क़ाइम मक़ाम और नाइब समझते हुए हर महीने की ग़्यारहवीं और ख़ास कर बड़ी ग़्यारहवीं की फ़ातिहा में इनके मददगार और मुआविन रहें और मेरे जद्द यानी गौसे पाक की नियाज़ उनको पहुंचाएं और बाल बराबर उनके हुक़म से इन्हिराफ़ ना करें, जो कोई उनके ख़िलाफ़ होगा वो मेरे और मेरे जद्दे बुजुर्ग़वार यानी गौसे पाक के ख़िलाफ़ है। और इसी रोज़ ख़्वाजा मुहम्मद मीर साहिब रहमतुल्लाह अलैह को ख़िरकए ख़िलाफ़त, ख़ास टोपी और अलम मर्हमत फ़रमाया। इस के बाद मौलवी शम्सुद्दुहा रहमतुल्लाह अलैह और सैय्यिद हसन अली साहिब रहमतुल्लाह अलैह को ख़िरकए ख़िलाफ़त, टोपी मुबारक और ख़िलाफ़त नामा अता हुआ।

जब हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह आगरा से रामपुर तशरीफ़ ले गए जहां अब हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक है तो वहां पहुंच कर मुझे तलब फ़रमाया और वहां ख़िलअते ख़ास दस्तार अपने सर मुबारक की और पंजए बग़दादी और अलम नामा मर्हमत फ़रमाया।

येह पंजा बग़दाद शरीफ़ का बना हुआ है और इस में “या सैय्यिद सुल्तान अब्दुल क़ादिर जीलानी शैइन लिल्लाह अलमदद” लिखा हुआ है। येह अलम हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह बग़दाद शरीफ़ से हिन्दुस्तान तशरीफ़ आवरी के वक़्त साथ लाए थे। हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि येह अलम मुबारक मेरे ज़द और मेरे आका ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार अक़दस के सिरहाने लगा हुआ था, मैं उसे हिन्दुस्तान ले आया था अब हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की येह अमानत उनके हुक्म के मुताबिक़ तुम्हें इनायत करता हूँ। इस की ताज़ीम जैसी चाहिए वैसी करना।

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं चुनांचे वो अलम शरीफ़ मेरे पास है और ग्यारहवीं शरीफ़ की मजलिस में एक मकान में जो कटरा आबरेशम ताज गंज में है और जिसके मालिकों ने वो मकान हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की नज़र कर दिया है। और हज़ारों मुरिदीन और तालिबीन उस रोज़ उस की ज़ियारत करते हैं।

(फ़र्ज़ि ग़ौसे आज़म, पेज 115,117)

नोट अब येह पंजा और अलम मुबारक हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के औलाद के पास सेब के बाज़ार में मेवा कटरा नामी मुहल्ले में मौजूद है और ग्यारहवीं शरीफ़ में इस की ज़ियारत करवाई जाती है।

इस के बाद हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी रहमतुल्लाह अलैह रामपुर (यूपी) तशरीफ़ ले गए। रामपुर के नवाब फ़ैज़ुल्लाह ख़ान आप रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द व मुरीद हुए और उनके इसरार पर हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह मुस्तक़िल तौर पर रामपुर में आबाद हो गए। रामपुर में हज़रत शैख़ सैय्यिद

अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह ने एक अज़ीमुशशान मस्जिद और ख़ानक़ाह तामीर करवाई लेकिन कभी घर नहीं बनाया। इस तामीराती काम के लिए फ़ैज़ुल्लाह ख़ान ने हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह को मदद करने की दरख़्वास्त पेश की लेकिन हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह ने मना फ़रमा दिया।

हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह का विसाल 14 मुहर्रम 1207 हिजरी को हुआ। आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक रामपुर में ही तामीर किया गया। हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह अपने साथ बग़दाद से एक पत्थर लाए थे जिसमें हुज़ूर सैय्यिदुना नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पांच मुबारक के निशान थे आप रहमतुल्लाह अलैह की वसीयत के मुताबिक़ ये पत्थर हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार में पैवस्त कर दिया गया।

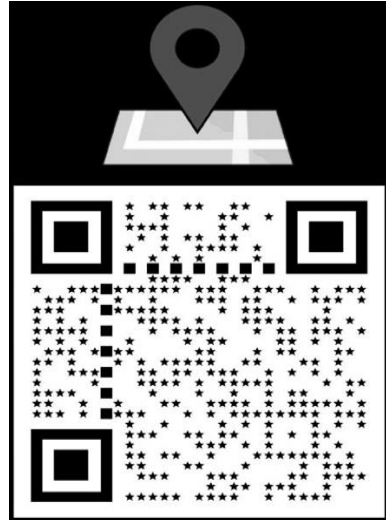
हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के खोलफ़ा में हज़रत सरकार क़िब्ला सैय्यिदुना हुज़ूर शाह नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत मौलवी सैय्यिदुना मज़हर अली रहमतुल्लाह अलैह, सैय्यिदुना शम्सुद्दुहा अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह शामिल हैं।

करामत

हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह रामपुर पहुंच कर एक आलीशान मस्जिद और चहार दीवारी और ख़ानक़ाह तैयार करवाया, और हर चंद नवाब साहिब ने अर्ज़ किया कि इस काम के वास्ते रुपये में नज़र करता हूँ। आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल नहीं फ़रमाया और जिस

मुसल्ले पर आप रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ फ़रमा थे तमाम दिन जिस क़दर खर्च की ज़रूरत होती मुसल्ले के नीचे से निकाल कर दिया करते थे। एक रोज़ एक मज़दूर ने येह ख़्याल कर के कि सैय्यद साहिब रहमतुल्लाह अलैह का सब रुपया वगैरा इस मुसल्ले के नीचे गड़ा रहता है रात को आकर उस जगह को खोदा, कुछ ना मिला, नादिम हो कर उस ज़मीन को वैसे ही बराबर कर दिया। अगले रोज़ फिर सैय्यद अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने उसी मुसल्ले पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और तमाम दिन जिस काम की ज़रूरत हुई उसी मुसल्ले के नीचे से निकाल कर दिया। शाम के वक़्त जब सबको मज़दूरी तक्रसीम फ़रमाई तो उस मज़दूर को दोगुनी मज़दूरी मर्हमत फ़रमाई, और फ़रमाया कि एक आज दिन की और एक रात की है। वो मज़दूर बहुत शर्मिदा हुआ और क़दमों पर गिर गया और क़सूर माफ़ कराया। (फ़र्ज़ि ग़ौसुल आज़म, पेज 23)

अब्दुल्लाह बग़दादी रामपुरी
रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के
Location का **QR Code** इस
को अपने मोबाइल से **Scan**
कीजिए, आप के मोबाइल पर
Location खुल जाएगी, जिस
की मदद से आसानी के साथ
आप मज़ार मुबारक तक पहुँच
सकते हैं।



सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊँ अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्बए नूरे ख़ुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिरागे पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
ख़ानवादए कादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिशती सुहर्वदी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते ख़ुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकू का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की ख़ाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की ख़ाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औकात क्या बेख़ुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं
शायर :वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान

आगरा वालों के लिए 12 किताबों का तोहफा

आगरा वाले आशिकाने औलिया के लिए खुशखबरी ! आगरा के औलियाए किराम की सीरत पर मुश्तमिल किताबों को हासिल कर के पढ़ें और दूसरों को तकसीम कर के फैज़ाने औलिया को आम करें ।

- (1) आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत
- (2) सरताजे आगरा और 29 औलियाए किराम की सीरत
- (3) आगरा के गौस शाह मुबारक गौस और 8 औलियाए किराम की सीरत
- (4) लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (5) हींग की मंडी व नाई की मंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत
- (6) बेलनगंज व अतराफ़ के 29 औलियाए किराम की सीरत
- (7) जमना पार (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (8) मिर्ज़ा खानदान के 4 औलियाए किराम की सीरत
- (9) कब्रिस्तान पंचकुइयां के 8 औलियाए किराम की सीरत
- (10) कब्रिस्तान पीर गिलानी के 5 औलियाए किराम की सीरत
- (11) ताजगंज (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (12) शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की सीरत
- (13) सराये ख्वाजा व अतराफ़ के 6 औलियाए किराम की सीरत
- (14) नई बस्ती व दीवान खाना के 8 औलियाए किराम की सीरत
- (15) सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की सीरत
- (16) आगरा के असातिज़ा और तलबा की सीरत
- (17) हज़रत अमजद अली शाह कादरी और 10 औलियाए किराम की सीरत
- (18) शैख सलीम चिश्ती की सीरत व फतेहपुर सीकरी की हिस्ट्री

मुसन्नफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल करें :8808693818

फेहरिस्त

मुसन्निफ़ का तआरुफ़.....	3
नाम और निस्बत	3
दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म.....	3
तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत.....	4
खिलाफ़तो इजाज़त.....	5
खिदमते दीन	5
मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा	6
आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़	7
खानवादए चिशितया के बुज़ुर्गाने दीन	8
खानवादए नक्शबंदिया के बुज़ुर्गाने दीन.....	8
खानवादाए शत्तारिया के बुज़ुर्गाने दीन.....	9
खानवादए मदारिया के बुज़ुर्गाने दीन.....	9
आगरा शहर का आबाद होना	10
सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद	11
दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा.....	11
ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा.....	12
बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा.....	12
तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा	14
आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	15
❧ सदक़ए जारिया का बेहतरीन मौक़ा ❧	17

शैखुल मशाईख हजरत सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी और 10 औलियाए किराम की प्यारी सीरत	18
पंजे मदरसा	18
(1) सैय्यिद अमजद अली शाह जाफ़री क़ादरी.....	18
(2) मौलवी आदिल	25
(3) मौलाना अहमदी क़ादरी	25
(4) हकीम सैय्यिद मीर	26
(5) सैय्यिद मुनव्वर अली शाह	27
(6) सैय्यिद मुज़फ़्फ़र अली शाह	27
दरगाह जलाल बुखारी ताजगंज	28
(7) मौलाना ज़ियाउद्दीन बलखी.....	28
मलकों गली ताजगंज.....	30
(8) सैय्यिद इमाम अली शाह	30
कब्रिस्तान दीवानखाना.....	31
(9) हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन रज़वी क़ादरी.....	31
बोदला (क़दम रसूल).....	35
(10) क़ाज़ी सैय्यिद महर अली क़ादरी.....	35
रामपुर यू पी.....	37
(11) हजरत अब्दुल्लाह बग़दादी रामपुरी	37